वीरेन्द्र भाटिया की कविता

लौट आओ कॉमरेड

तुम्हें तुम्हारा घर बुला रहा है लौट आओ
बंद सीवरों वाली संकरी गली के
अपने पुश्तैनी मकान में
जिसकी दीवारें मरम्मत मांगती है
जिसकी छतों से गिरता है चूना
एक बार आओ कॉमरेड
देखो अपनी बीवी के पेट में झांककर
कि इतने बरसों में उसने अन्न ज्यादा
खाया या चूना
देश की जीडीपी पर बोलना स्थगित करके
घर की जीडीपी देखो कॉमरेड
कि बीवी ने कैसे संभाला है घर और बच्चे
अब बीवी थक गयी है
बीमार है
तुम भी ऐसा तो नहीं समझ रहे कॉमरेड
कि चिता तक जाने से पहले औरत
बीमार नहीं कहलाती।

सुनो कॉमरेड
देश में पूंजीवाद के पसरने के बाद
ठीकठाक हो गयी है तुम्हारी पुश्तैनी
मकान की कीमत
और तुम्हारे सभी साथी
प्रोपर्टी डीलर हो गये हैं
वो कार में गुनगुना लेते हैं समाजवाद।

घर में आने लगे हैं
गन्डा ताबीज और वास्तु वाले लौट आओ
कि बच्चों की अधूरी शिक्षा
अधूरी खुराक
और पत्नी के गले तक पहुंच रहा ताबीज
तुम्हारी लड़ाई को
बेमानी कर रहे हैं
लौट आओ कामरेड।

कुछ तो होता है आदमी में / विष्णु नागर

कुछ तो होता है आदमी में
कि हत्यारों के समय में भी साँस ले लेता है
हँस- मुस्कुरा लेता है
हृदय के बंद कपाट खोलने के खतरे उठाता है
दिमाग के दरवाजे-खिड़कियाँ
कितनी ही बार हवा के जोर से बंद हो जाएँ
चाहे ईंट-पत्थर अड़ाना पड़े मगर खुले रखता है
धूल -मिट्टी के डर को जीत लेता है

कुछ तो होता है आदमी में कि ऐसे समय में
हत्यारों के पड़ोस में डरते-डरते नहीं
लड़ते-लड़ते जीता है

कुछ तो होता है आदमी में कि
बर्दाश्त की हद गुजर जाए तो भी सह लेता है
लेकिन किसी दिन किसी की कोहनी भी छू जाए
तो बुरी तरह फट पड़ता है

कुछ तो होता है आदमी में कि ऐसे समय में
खुफिया पुलिस सिर पटक-पटक कर मर जाए
तो भी अपने लिए जीने-मरने वालों का
पता-ठिकाना नहीं देता है

कुछ तो होता है आदमी में कि ऐसे समय में
ऑक्सीजन की कमी और रोटी के बिना भी
मरने से जितना बच सके, बचता है
अपने आप से और दूसरों से लगातार लड़ता है

कुछ तो होता है आदमी में
घने अंधेरे में गिरते-पड़ते, चोट खाते हुए
रोशनी की दिशा में चल पड़ता है।

कांवड़, विवेक, तर्क और संविधान

मुनेश त्यागी

आजकल कांवड यात्रा की धूम मची हुई है, पश्चिमी उत्तर प्रदेश का हर शहर और लगभग हर गांव में कांवड की गूंज मची हुई है। मुख्य मार्गों पर जय बम, जय भोले के नारे गुंजाय मान है, क्या बच्चे क्या बूढ़े ,क्या पुरुष क्या महिलायें सब कांवड़ ला और ले जा रहे हैं। लोग बाजारों से नदारद हैं, दुकानें बंद हैं, बाजारों में सन्नाटा छाया हुआ है। कोर्ट कचहरी, आफिस सब में से आदमी नदारद हैं अदालतें खाली पडी हैं। प्रेू शहर के शहर और गांव के गांव कांवड़मय हो गये हैं।

कांवड़िये कई कई सों मील गंगाजल से भरे घड़े ले जा रहे हैं, अबकी बार तो नया नजारा काफी देखने में आ रहा है कि अधिकांश कावंड़िये तिरंगा झंडा भी लिये हुए है। कुछ कांवड़ियों ने तरह तरह का रूप धारण कर रखा है ताकि देखने वालों को हंसाया जा सके।

हमने अनेक कांवडियों से पूछा कि उनकी भोले से क्या मन्नतें हैं, तो कोई कांवड़िया ऐसा नही था कि जिसकी कोई मन्नत या मांग ना हो या भोले से कोई आशा न हो। कोई भोले से अच्छे स्वास्थ्य की कामना कर रहा है, कोई अच्छे नम्बरों से पास होने की बात कर रहा है, कोई इम्तिहान में, कम्पीटिशन परीक्षा में पास होने की मन्नत मांग रहा है, कोई बीमारी से ठीक होने की बात कर रहा है, कोई रोजगार की मांग कर रहा है तो कोई अच्छी शादी होने की मन्नत मांग रहा है। किसी का धंधा चल जाये, कोई देश में अमन चैन रहे यह मन्नत मांग रहा है। कोई लडका होने की मांग कर रहा है। कोई अच्छी सी बहु मिल जाय यह मन्नत पाले हुए हैं। मन्नतों की फहरिस्त बहुत लम्बी है। कोई कह रहा है कि सूखा पड़ रहा है तो बारिश हो जाये।

यह सब आस्था और विश्वास का मामला है, इन मन्नतों और मांगों का हकीकत, तथ्यों या असलियत, विवेक या तर्क से कोई लेना देना नही है। पास होने के लिए अच्छी शिक्षा, शिक्षक और अच्छे स्कूल का होना ज़रूरी है, स्वस्थ होने के लिए अच्छे डाक्टरों, अस्पतालों और अच्छी व कारगर दवाईयों का होना जरूरी है, काम मिलने और रोजगार मिलने के लिए रोजगार परस्त नीतियों का होना ज़रूरी है, शादी, दुल्हा दुल्हन, बारिश होने आदि आदि के अपने अपने कारण और नीतियों का होना जरूरी है। अमनचैन के, शांति और सुकून व सुरक्षा के अपने कारण हैं, ये सब इनकी आस्था और विश्वास हैं। इनका हकीकत, असलियत और तथ्यों से कोई सरोकार नही है। मगर आस्था और विश्वास, तर्क तथ्यों, विवेक और तार्किकता में कम ही विश्वास करते हैं।

ये करोड़ों लोग बलिदानी, विश्वासी, लगन के पक्के और बहादुर लोग हैं, इनमें ज्यादातर गरीब, वंचित और अभावग्रस्त तबकों के लोग हैं जो अपने कष्टों का..... गरीबी, मुफलिसी, बीमारियों, बेरोजगारी, असुरक्षा का निवारण चाहते हैं। इनका विश्वास है कि कांवड़ यात्रा से इनकी समस्यायें और हजारों साल के अभावों का अंत हो जाएगा। यह इनकी आस्था और विश्वास का मामला है। हमारा मानना है कि यह सब करने से इनके हजारों साल पुराने अन्याय, भेदभाव, शोषण, जातिवाद, बेरोजगारी, गरीबी का, बीमारियों का, निदान होने वाला नही है। यह सब करने से इनकों मुक्ति मिलने वाली नही है। इन हजारों साल पुरानी समस्याओं से निजात दिलाने के लिए जनपक्षीय नीतियों का होना सबसे ज्यादा जरूरी है। इन लोगों को इनकी समस्याओं के वैज्ञानिक कारण बताया जाना ज्यादा जरूरी है। यह जरूरी काम हमारी सरकारों ने पिछले सत्तर सालों में भी नही किया है।

काश इनमें आस्था और विश्वास के साथ वैज्ञानिक संस्कृति, सोच और मानसिकता का सृजन किया गया होता इन्हें इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणित, अंग्रेजी, हिन्दी, राजनीति विज्ञान, जूलोजी, बोटनी, फिजिक्स, कैमिस्ट्री, भूगर्भ विज्ञान, कम्प्यूटर साइंस, चिकित्सा शिक्षा, कानूनी शिक्षा सैन्य शिक्षा, विज्ञान, पूंजीवाद, समाजवाद साम्यवाद, धर्मनिरपेक्षता जातिवाद, साम्प्रदायिकता, फासीवाद के विषय में आदि के बारे में और जानकारी दी जाती तो इनके लिए कोई भी काम बडा नही होता। ये कितनी ही एवरेस्ट की चोटियों को फतह कर चुके होते। यदि ऐसा किया गया होता तो ऐसी कोई समस्या नही होती जिसका ये हल या समाधान न कर पाते और भारतीय संविधान की मूल भावनाओं को आगे न बढा रहे होते। अगर हमारी सरकारें अपनी जिम्मेदारियां पूरी करती तो आज हमारे देश में वैज्ञानिक संस्कृति, तर्क, विश्लेषण, अनुसंधान और खोज की मानसिकता, नजर और नजरिये का सैलाब आ गया होता और हमारा समाज और देश विकास, उन्नति और प्रगति की कुलाचें भर रहा होता।

मगर अफसोस कि आदमी अपने कष्ट निवारण की, मुक्ति की, कल्याण की हजारों साल पुरानी समस्याओं के निदान की आशा और विश्वास वहां से किये बैठा है जहां कुछ भी मिलने वाला या हासिल होने वाला नही है।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

शिक्षा का नवीनीकरण

आज विश्व उन्नति की चरम सीमा की तरफ अग्रसर है। नित नए अविष्कारों के कारण ऐसे उपकरण बनाए जा रहे हैं जिनसे जीवन सरल व सहज बनता जा रहा है। वैज्ञानिक अभी भी खोज में लगे हैं कि किस प्रकार जीवन को अधिक सहज बनाया जा सके।

यह सब उच्च कोटि की शिक्षा पद्धति के कारण ही संभव हो सका है। परन्तु भारत में आज भी पाठ्यक्रम उसी पुराने ढंग पर आधारित है जो बहुत समय पहले था। हमारी शिक्षा पद्धति में जिस पाठ्यक्रम के द्वारा बच्चों को शिक्षा दी जा रही है उसकी उपयोगिता आज की जिंदगी में न्यूनतम है। हमारी शिक्षा पद्धति का नवीनीकरण होना चाहिए जो अभी तक नहीं हो पाया।

वास्तव में बच्चों जब अपनी पढ़ाई समाप्त करके रोज़गार की ओर मुड़ते हैं तो वे वहाँ बड़ी ही असमंजस की स्थिति पाते हैं क्योंकि जो दक्षता एवं निपुणता उन्हें उस रोज़गार में आवश्यक होती है वह उनके द्वारा प्राप्त की गई शिक्षा में उसकी कमी होती है। हम आज भी बच्चों को किताबी शिक्षा तक ही सीमित रखते हैं और रटन्तु विद्या पर ही ज़ोर देते हैं।

भारतीय शिक्षा के मानक पर आज भी अधिक अंक पाने वाला बच्चा सर्वश्रेष्ठ माना जाता है जबकि असल ज़िंदगी में बच्चों को उन अंकों से अधिक आवश्यकता होती है रचनात्मक ज्ञान एवं व्यवहारिकता की जो हमारे विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में कम पाई जाती है।

हमें आवश्यकता है कि अब विद्यालयों में पाठ्यक्रम को इस प्रकार तैयार करें जो वर्तमान में आए बदलाव व सामाजिक व्यवस्था के साथ तालमेल बैठा सके। बदलते समय के साथ ही शिक्षा पद्धति का बदलना अनिवार्य है। पाठ्यक्रम में चरित्र निर्माण, निपुणता व दक्षता पर भी विशेष ज़ोर होना चाहिए। शिक्षा रोज़गार को उपलब्ध कराने का माध्यम तो है ही साथ ही आज के युग में होने वाली समस्याओं को सुलझाने में भी सक्षम होनी चाहिए। इसके अलावा पाठ्यक्रम में दूरदर्शिता एवं मानव आधारित शिक्षा का समावेश होना आवश्यक है तभी हम आज की पीढ़ी को भविष्य में सफल जीवन प्रदान कर सकते हैं।